

हार्निकारणना कल्याण स्वशाप

19/1/26 पञ्चपत्रके प्रेमार्थी वृत्तिल प्राची निकाल (उम्मे)

निगलकार स्वयं उच्यते परं वाट के वाज  
दिलार्थे वरुं केरुं उपरही भापे । अतः निगलकार  
की निगलकारो अहम् प्रेमी कलस एवम्ही मे  
अरिप निज पत्ता है । पञ्चपत्रके वरुं प्रेमी  
होकर वीर्य कम्प है ।

म/   
अति० कलकार  
कलसा (वीसा)